

दैनिक

उत्तम हिन्दू

स्थापना 1983

■ पंजाब ■ हरियाणा ■ हिमाचल ■ चंडीगढ़ ■ दिल्ली ■ उत्तर प्रदेश

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर : डा. चौधरी

आईसीएआर की डीडीजी, एडीजी सहित नेहुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के 55 सदस्यीय दल ने गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का किया दैरा

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क

कुरुक्षेत्र/दुर्गाल: आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर विसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक वर्षात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए वह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है।

उक्त शब्द आज आईसीएआर के डीडीजी डा. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी डा. राजबीर, डा. वेलमुरुगन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे।



गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दैरा करते नेहुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के सदस्य।

कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवदत्त के ओएसडी डा. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विश्ववात

कृषि वैज्ञानिक डा. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डा. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्वर्य से भर जाते हैं क्योंकि

यहां पर गंगा और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गंगा की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हैवेवर रहेगा।

आचार्य आर के मार्गदर्शन में यहां पर % कमल % का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दैरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह

कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी। विख्यात कृषि वैज्ञानिक डा. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सत्त गुण नाइट्रोजन, फास्फोरस और योटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमृत के प्रभाव से खेत में चुहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता। क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपेक्षित नमी और वापसा की ज़रूरत होती है।

आईसीएआर की डीडीजी, एडीजी सहित नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के 55 सदस्यीय दल ने गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का किया दौरा



कुरुक्षेत्र (दैनिक हाल): आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर विसर्च करेगा ताकि अलग-अलग लोगों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी बाले क्षेत्र, रेतीली भूमि बाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहाँ पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल बातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उनके शब्दों में, वे कहते हैं कि वहाँ पर आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे हैं। उनके साथ एडीजी डॉ. राजवीर, डॉ. वेलमुखान और अन्य 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौरे पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल

आचार्य देवब्रह्म के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहाँ से लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहाँ आकर आधर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहाँ पर गता और धान की फसलों को देखकर हर कोई हीरान है। गता की फसल देखकर स्पष्ट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कून्तल प्रति हेक्टेएक्टर रहेगा। आचार्याचार्य के मार्गदर्शन में यहाँ पर 5% कमल% का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहाँ से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ को भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुण नाइट्रोजन, फास्कोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत नहीं रहेगी।

उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कोट नहीं आते विस्तर से किसान को फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता। क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं आपत्ति

नहीं और वापसा जौ जरूरत होती है। सोनियर माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आमतौर पर खेत को छह इंच, एक कॉट या दो पौट मिट्टी के तन्त्रों की बात होती है जबकि मत्त्वाई यह है कि मिट्टी में फसलों के लिए आवश्यक सभी तन्त्रों का अधाह भण्डार है उस उन तन्त्रों को ऊपरी सतह पर लाने के लिए सही बातावरण उपलब्ध कराने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती, जीवाणुओं की खेती है। इसमें देशी गाय के गोबर-गोमूत्र से बने जीवामृत व घन-जीवामृत के प्रभाव से जमीन के नीचे के मित्रजीव ऊपर आते हैं और जमीन को उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और धीरे-धीरे देश के कृषि वैज्ञानिक इसे स्वीकार भी कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर



गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा करते नेचुरल रिसॉर्स मैनेजमेंट के सदस्य।

संवाद सहयोगी। करुणेत्र

आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पूरे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द आज आईसीएआर के डॉ.डीजी.डॉ. एस्केपी

कृषि कार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी.डॉ. राजबीर, डॉ. वेलमुख्गन सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केंद्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौर पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यीय इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल आचार्य देवब्रत के ओएसडी.डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम व व्यवस्थापक रामनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का यह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से

बहुत कुछ सीख सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्चर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना और धान की फसलों को देखकर हर कोई हैरान है। गन्ना की फसल देखकर स्टैट है कि इसका उत्पादन 400 से 500 कुन्तल प्रति हेक्टेयर रहेगा। आचार्यश्री के मार्गदर्शन में यहां पर कमल का सफल उत्पादन हो रहा है। देश के किसानों को गुरुकुल के कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा लेने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के साथ आधुनिक तकनीक को जोड़ कर यदि किसान काम करेगा, तो निश्चित तौर पर यह कृषि के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी पहल होगी।

केंचुआ की भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिओम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक वर्ष में लगभग साढ़े तीन किलो उपजाऊ मिट्टी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुण नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पूरे देश में पूरे

नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाय व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दूसरे कीट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुरक्षा स्वयं हो जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपेक्षा नहीं और वापसी की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रो बायोलोजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश भी डाला।

प्राकृतिक खेती पर देशभर में रिसर्च करेगा आईसीएआर : डॉ. चौधरी



गुरुकुल के प्राकृतिक फार्म का दौरा करते नेवुरल रिसर्च मैनेजमेंट के सदस्य।

सवेरा न्यूज़/जसवीर दुग्गल

कुरुक्षेत्र, 03 सितंबर : आईसीएआर यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् परे देश में प्राकृतिक खेती पर रिसर्च करेगा ताकि अलग-अलग क्षेत्रों के किसानों को प्राकृतिक से जोड़ा जा सके। इसमें कम पानी वाले क्षेत्र, रेतीली भूमि वाले क्षेत्र, अधिक बरसात वाले क्षेत्र आदि अलग-अलग जगह पर प्राकृतिक खेती पर अनुसंधान के जरिए वह सुनिश्चित किया जाएगा कि वहां पर प्राकृतिक खेती के लिए अनुकूल वातावरण किस प्रकार से तैयार किया जा सकता है। उक्त शब्द, आज आईसीएआर के डीडीजी डॉ. एस. के. चौधरी ने गुरुकुल के प्राकृतिक कृषि फार्म पर कहे। उनके साथ एडीजी

डॉ. राजवीर, डॉ. वेलमुरान सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के सभी 15 केन्द्रों प्रमुख तथा कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल के दौर पर पहुंचे। कृषि विशेषज्ञ तथा कृषि वैज्ञानिकों के 55 सदस्यों इस दल का गुरुकुल पहुंचने पर महामिहिम राज्यपाल आचार्य देववत के ओपस्डी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकर सहित विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिआम व व्यवस्थापक राजनिवास आर्य ने जोरदार स्वागत किया। डॉ. चौधरी ने कहा कि गुरुकुल का वह फार्म प्राकृतिक खेती का विश्वविद्यालय है, देशभर के कृषि वैज्ञानिक यहां से बहुत कुछ सौख्य सकते हैं। वे स्वयं यहां आकर आश्वर्य से भर जाते हैं क्योंकि यहां पर गन्ना

प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम

विख्यात कृषि वैज्ञानिक डॉ. हरिआम ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भारतीय केंचुआ की भूमिका अहम है। एक केंचुआ एक वर्ष में लगभग साढ़े 3 किलो उपजाऊ मिट्ठी आपके खेत में छोड़ता है, जिसमें सात गुणा नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश होता है। यदि पुरे देश में पूरे नियमों के साथ प्राकृतिक खेती की जाए तो किसानों को खेतों में बाहर से कोई भी खाद खरीदकर डालने की जरूरत ही नहीं रहेगी। उन्होंने बताया कि गोमूत्र के प्रभाव से खेत में चूहे, नीलगाढ़ व फसल को नुकसान पहुंचाने वाले दसरे कट नहीं आते जिससे किसान की फसल की सुख्ता स्तर ही जाती है। इतना ही नहीं सूखा पड़ने पर भी प्राकृतिक खेती पर कोई खास असर नहीं पड़ता क्योंकि प्राकृतिक खेती में फसल को पानी की नहीं अपेक्षित नहीं और वापसी की जरूरत होती है। सीनियर माइक्रो बायोलॉजिस्ट डॉ. बलजीत सहारण ने जीवाणुओं की गतिविधि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अमातौर पर खेत की छाँट इंस. एक फीट वा दो फीट मिट्ठी के तत्वों की बात होती है जबकि सच्चाई यह है कि मिट्ठी में फसलों के लिए अधिक सभी तत्वों का अथाह भण्डार है उस उन तत्वों को ऊपरी सतह पर लाने के लिए सही वातावरण उपलब्ध कराने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती, जीवाणुओं की खेती है। इसमें देशी गांव के गोबर-गोमूत्र से बन जीवाणुमृत व घनजीवाणुमृत के प्रभाव से जीवन के नीचे के मिक्रोजीव ऊपर आते हैं और जीवन को उपजाऊ बनाने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और धीरे-धीरे देश के कृषि वैज्ञानिक इसे स्वीकार भी कर रहे हैं।

और धन की फसलों को देखकर हर कृषि फार्म का दौरा कर यहां से प्रेरणा कोई है। गन्ना की फसल देखकर लेने की जरूरत है। यहां से कि इसका उतादन 400 से 500 कुनॉल प्रति हेक्टेएक्ट रहेगा। के साथ आधुनिक तकनीकों को जोड़ आचार्यशी के मार्गदर्शन में यहां पर कर यदि किसान काम करेगा, तो हायकमलह का सफल उतादन हो रहा निश्चित तौर पर वह कृषि के क्षेत्र में है। देश के किसानों को गुरुकुल के एक क्रांतिकारी पहल होगी।

डिए



त्रों का
किया जाएगा।
इकी
प्रयों के
रूप से चित्र
बर पर
म इन्हें सहर्ष

44319
53344